शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि :- श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न :- 'पथिक' काव्य में राजा के क्रोध और बुद्धिहीनता पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- आधुनिककालीन हिन्दी साहित्य के चर्चित कवि श्री-राम नरेश त्रिपाठी ने अपने खण्ड काव्य 'पथिक' में राजा के क्रोध और बुद्धिहीनता पर विस्तार से प्रकाश डाला है। जब पथिक की हत्या राजा के आदेश से कर दी गयी तो पूरे देश में राजा के विरुद्ध असंतोष फैल गया। आम जन-मानस में क्रान्ति की चिनगारी सुलगने लगी। राजा को अपने अहंकार पर विश्वास था, इसी मद में मदमस्त होकर वह अन्धा बन चुका था। अच्छे-बुरे के भेदभाव से वह शून्य हो गया था। यह उसकी मूर्खता पूर्ण भावना थी कि वह पथिक के सारे स्मृति चिह्नों को मिटा देना चाहता था। जब पथिक की घर जलाने की बात आई तब प्रजा में सनसनी फैल गयी। अब ऐसी स्थिति हो गयी थी कि प्रजा विद्रोह प्रकट करे किन्तु इसमें थोड़ी देर थी। परन्तु राजा ने स्वयं प्रजा को विद्रोह करने के लिए विवश कर दिया।

राजा की आज्ञा में पथिक का नाम सुनकर प्रजा को कुछ राहत मिली क्योंकि उन्हें तो पथिक का नाम तक लेने की अनुमति नहीं थी। जैसे ही यह नाम लिया गया, प्रजा के मानस पटल पर पथिक के सम्बन्ध में सारी स्मृतियाँ पुनः उमड़ आईं और वे सभी पुनः विछोह के दुख में डूब गये। किन्तु इतना तो निश्चित था कि इस नाम स्मरण से उन्हें संतोष प्राप्त हुआ।

पथिक की याद सजीव होते ही मन का आलस्य दूर हो गया। उनकी प्रसन्नता पुनः प्रकट हुई। परन्तु एक लम्बे समय से रुका हुआ दुःख का वेग फूट पड़ा और राजा का अहंकार समाप्त हो गया।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कु०सं० महावि० लुखसेना प्रीणियाँ

25/09/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

जयद्रथ-वध

कवि- श्री मैथिलीशरण गुप्त

साक्षात चराचरनाथ, तुम रहते हो स्वयं जब हो दया,
आश्चर्य फिर क्या जो जयद्रथ, युद्ध में मारा गया?
तो भी इसे सुनकर हृदय में सुख समाता है नहीं,
साधन- सफलता सुख- सदृश सुख-दृष्टि में आता नहीं।।

भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण के वचनों को सुनकर सभी पाण्डव बहुत प्रसन्न हैं। इसी क्रम में युधिष्ठिर काफी प्रसन्न मुद्रा में होकर कहते हैं कि जहाँ चर-अचर के स्वामी स्वयं ही हमारे साथ हैं तथा वे हम पर हर समय कृपा करते हैं तो ऐसी स्थिति में जयद्रथ के युद्ध में मारे जाने में क्या आश्चर्य है। फिर भी जयद्रथ का युद्ध में वध हो गया, यह सुनकर हृदय को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ यह प्रसन्नता अर्थात् खुशी हृदय में समा नहीं पा रही है। वास्तव में इस संसार में साधनों का उपलब्ध होना और उनसे प्राप्त सफलता के कारण उत्पन्न सुख के समान और दूसरा कोई भी सुख इस संसार में नहीं होता है।

कवि का कहना है कि आज युधिष्ठिर बहुत प्रसन्न हैं। प्रसन्नता होना भी चाहिए। क्योंकि यही वह जयद्रथ था जब अभिमन्यु के साथ सात-सात महारथियों ने एक साथ मिलकर, युद्ध के नियमों का उल्लंघन करते हुए उस प्रहार किया गया। अभिमन्यु के मृत्य शरीर पर जयद्रथ ने ही गदा से प्रहार किया था। ऐसे जघन्य अपराधी को सजा मिली है। इसलिए पाण्डव श्रेष्ठ श्रीकृष्ण के वचनों को सुनकर अपनी भावना को व्यक्त करते हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

25/09/20

बाद का सारा समय मालती को घर में एकाकी काटना होता है। उसका दुर्बल और चिड़चिड़ा पुत्र हमेशा रोता रहता है। मालती उसकी देख-भाल करती हुई सुबह से रात ग्यारह बजे तक घर के कार्यों में अपने को व्यस्त रखती है। उसका जीवन उदासी के बीच यंत्रवत चल रहा है। किसी प्रकार का उल्लास या उत्साह उसके जीवन में नहीं रह गए हैं।

इस प्रकार लेखक मध्यवर्गीय भारतीय समाज में घरेलु स्त्री के जीवन और मनोदशा पर सहानुभूति पूर्ण मानवीय दृष्टि केन्द्रित करता है। कहानी के गर्भ में अनेक सामाजिक प्रश्न विचारोत्तेजक रूप में पैदा होते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०ऊ०सं० महावि० पुलसेना, पूर्णियाँ

25/04/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

द्विगीत- भाग - 2 गद्य भाग

शीर्षक - रोज़

लेखक - सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

प्रश्न:- 'रोज़' शीर्षक कहानी का सारांश लिखें।

उत्तर:- 'रोज़' कथा साहित्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन के प्रणेता महान कथाकार सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय की सर्वाधिक चर्चित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में सम्बन्धों की वास्तविकता को एकान्त वैयक्तिक अनुभूतियों से अलग जाकर सामाजिक सन्दर्भ में देखा गया है। मध्यवर्ग की पारिवारिक एकरसता को जितनी मार्मिकता से कहानी व्यक्त कर सकी है वह उस की कहानियों में विरल है।

लेखक अपने दूर ~~की~~ के रिश्ते की बहन मालती जिसे सखी कहना उचित है, से मिलने अठारह मील पैदल चलकर पहुँचता है। मालती और लेखक का जीवन ~~इकट्ठे~~ इकट्ठे खेलने, पिटने, स्वेच्छा एवं स्वच्छन्दता तथा भ्रातृत्व के छोटेपन ~~के~~ के बंधनों से मुक्त बीता था। आज मालती विवाहिता है, एक बच्चे की माँ भी है। वार्तालाप के क्रम में आए उतार-चढ़ाव ~~में~~ में लेखक अनुभव करता है कि मालती की आँखों में विचित्र-सा-भाव है, मानो वह भीतर कहीं कुछ चेष्टा कर रही हो, किसी बीती बात को याद करने की। किसी बिखरे हुए वायुमण्डल को पुनः जगाकर गतिमान करने की और चेष्टा में सफल न हो चिर विस्मृत हो गयी हो। मालती रोज़ कोल्हू की बैल की तरह व्यस्त रहती है। उसका जीवन गैंग्रीन मर्ज के समान है जिसका ऑपरेशन उसके डाक्टर पति द्वारा किया जाता है। पूरे दिन काम करना, बच्चे की देख-भाल करना और पति का इंतजार करना इतने में ही मानों उसका जीवन सिमट गया है।

वातावरण, परिस्थिति और उसके प्रभाव में ढलते हुए एक गृहिणी के चरित्र का मनोवैज्ञानिक उद्घाटन अत्यन्त कलात्मक रीति से लेखक यहाँ प्रस्तुत करता है। डॉ॰ पति के काम पर चले जाने के

(शेष आगे)